प्रेमचंद के उपन्यास में मध्यवर्ग की भूमिका

डॉ. निदा*

जब हम मानव समाज की कल्पना करते हैं तब हमारे दिल में हमारे दिमाग में वर्गों का स्वरूप अपने आप जाग्रत हो जाता है। इस वर्ग के निर्माण को विभिन्न रूपों में देखा है। वह वर्ग जिसकी स्थिति समाज में उच्च तथा निम्नवर्ग के मध्य होता है उसे हम मध्यवर्ग कहते हैं।

विभिन्न देशों में मध्यवर्ग का उद्‌भव, विकास और वर्तमान स्थिति भिन्न-भिन्न सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक वातावरण का परिणाम है। मध्यवर्ग केवल एक स्तरीय लोगों का वर्ग नहीं है। इसके सदस्य आर्थिक और सामाजिक दृष्टि से भिन्न धरातलों पर रहते हैं।

मैकाइवर और पेज के अनुसार- ''किसी भी वस्तु या प्रवृत्ति को पूर्ण रूप से जानने के लिए यह आवश्यक है कि इस वस्तु की परिभाषा निश्चित कर ली जाये। इस दृष्टिकोण से मध्यवर्ग की परिभाषा निश्चित कर लेना अत्यन्त आवश्यक है। साधारण रूप से समाज को कई प्रकार से बाँटा जाता है- उदाहरण: सेक्स के आधार पर, आयु के आधार पर, जाति और प्रजाति के आधार पर तथा धर्म के आधार पर''[1]

समाजशास्त्रीय विश्वकोष के अनुसार-

“Middle class therefore today is a term of designation a heterogeneous section of the population made up chiefly of small businessman and small industrialists, professional and other intellectual workers with moderate incomes skilled artisans, prosperous farmers white collar workers and salaried employees of larger mercantile, industrial and financial establishment. They have few common economic interests whatever unity they posses lies in their educational standards, their standards of living and ideals of family life, their modes recreational interest."[2]

मध्यवर्ग के व्यक्ति बुद्धिजीवी कार्यों से जुड़े होते हैं- जैसे डाक्टर, आर्किटेक्चर, शिक्षक, उद्योगपति या ऐसे कार्यों से जुड़े व्यक्ति जो वित्त से सम्बन्धित हों उसे हम मध्यवर्ग की संज्ञा देंगे। अत: डाक्टर, शिक्षक, उद्योगपति और वित्त से जुड़े हुए व्यक्तियों को हम मध्यवर्ग के अन्तर्गत सम्मिलित करेंगे।

बी.बी. मिश्र मध्यवर्ग को परिभाषित करते हुए लिखते हैं-

“The middle classes emerged basically as a result of economic and technological change, they were for the most part engaged in trade and industry."[3]

अत: पूँजीवादी व्यवस्था के बाद समाज की आर्थिक व्यवस्था इतनी जटिल हो गयी कि इस जटिल संघटन सूत्र को संभालने के लिए समाज को तीन भागों में बांटा गया- (1) उच्चवर्ग (2) मध्यवर्ग (3) निम्नवर्ग।

*पीएचडी